कल्हणकृत राजतरंगिणी:भारतीय इतिहास लेखन परंपरा में वस्तुनिष्ठ दृष्टिकोण

किशोर कुमार
एसोसिएट प्रोफेसर–इतिहास,कु.मा.रा.म.स्ना.महा. बादलपुर, गौतमबुद्ध नगर
Email: dr.kumarkishor@gmail.com

Abstract. प्राचीन भारत में अत्यंत समृद्धशाली भारतीय संस्कृति के अनुरूप धर्म, अध्यात्म, प्रकृति, खगोल विज्ञान, गणित, शल्य चिकित्सा, राजनीति इत्यादि के अनेक गहन एवं व्यापक साक्ष्य प्रचुर मात्रा में उपलब्ध है, किन्तु समृद्धशाली अतीत के समस्त अवयव होने के बावजूद प्राचीन भारत में इतिहास बोध के साथ ऐतिहासिक इतिवृत की विशेषता के साथ कल्हण की राज तरंगिणी के अतिरिक्त ना तो कोई रचना प्राप्त होती है और ना ही कोई इतिहासकार। यह शोध पत्र कल्हण की राजतंरगिणी के ऐतिहासिक महत्व को विश्लेषित करने का सूक्ष्म प्रयास है।

भारतीय अतीत अत्यंत समृद्ध एवं व्यापक है किंतु अत्यंत विडंबना पूर्ण तथ्य है कि विश्व की प्राचीनतम सभ्यताओं में से एक भारत अपने समृद्धशाली अतीत को वास्तविक प्रतिनिधित्व प्रदान करने में अद्यतन असमर्थ है। यह सत्य है कि अतीत पूर्ण होता है और इतिहास ही उसे अधिकतम रूप से प्राप्त करने का सर्वाधिक सशक्त माध्यम है। निःसंदेह यह शोध पत्र कल्हण की राजतंरगिणी के ऐतिहासिक महत्व को विश्लेषित करने का सूक्ष्म प्रयास है।प्राचीन भारतमेंराजतरंगिणी के अतिरिक्त अन्य रचनाएं यथार्थ बोध से परे कल्पनाशीलता, सौंदर्य बोध एवं महिमा मंडित अतिशयोक्ति पूर्ण वर्णन से परिपूर्ण प्रतीत होती है। इस सन्दर्भ में ई. श्रीधरन अपनी पुस्तक ए टेक्स्टबुक आफ हिस्टोरियोग्राफी में लिखते है ''मानव जाति के इतिहास में कोई भी विकसित सभ्यता ऐसी नहीं है, जिसने ऐतिहासिक साहित्य को इतना कम प्रतिनिधित्व प्रदान किया हो। प्राचीन भारत के औपचारिक इतिहास में मात्र कल्हण कृत राजतरंगिणी एक मात्र ऐतिहासिक ग्रंथ है।''

राजतरंगिणी एकमात्र ऐसा महाकाव्य है जिसे संस्कृत के ऐतिहासिक महाकाव्यों का सिरमौर कहा जा सकता है। इसके रचयिता कल्हण कश्मीर से संबंधित है। संस्कृत साहित्य में इतिहास को काल्पनिकता और सौंदर्य बोध से मुक्त रखकर शुद्ध इतिहास मानकर लिखने वाले तथ्यों को तिथि आदि के प्रामाणिक साक्ष्य और क्रम के साथ प्रस्तुत करने वाले यह अब तक के प्रथम ज्ञात कवि है। यही कारण है कि राजतरंगिणी को ऐतिहासिक महाकाव्य परंपरा में विशिष्ट स्थान प्राप्त है। समीक्षकों ने अंतःसाक्ष्य के अनुसार कल्हण का जन्म 1098 ईसवीं के लगभग माना है।

राजतरंगिणी के अनुसार यद्यपि कल्हण का शैव होना प्रमाणित होता है, तथापि उसमें अन्य धर्मों के प्रति भी पर्याप्त सहिष्णुता तथा आस्था थी। महाकवि कल्हण ने बौद्ध धर्म से संबंधित अनेक पारिभाषिक शब्दों का प्रयाग किया है।

राजतरंगिणी में कश्मीर के राजाओं का विस्तृत इतिहास है। राजतरंगिणी का रचनाशिल्प महाभारत से समानता रखने वाला व काव्य गुणों से समृद्ध है। इसमें महाभारत काल से प्रारंभ कर 1150 ईसवी तक के कश्मीरी नरेशों का इतिवृत तथा चित्रांकन मनोरम शैली में किया गया है। राजतरंगिणी 8 तरंगों में विभक्त है, जिसमें कुल 7826 श्लोक है। प्रथम 6 तरंग छोटे तथा दो तरंग बहुत बड़े हैं। आठवां तरंग तो

समस्त ग्रंथ के आधे से अधिक परिमाण में है। राजतरंगिणी अपने लेखन काल से ही अत्यंत लोकप्रिय रचना रही है।

राजतरंगिणी का शाब्दिक अर्थ है– रिवर ऑफ किंग' अर्थात् राजाओं की तरंग, जो गोनंद प्रथम से उठकर सात वाहन वंश के राजाओं तक अविरल रूप से प्रवाहित होती है। राजतरंगिणी विशुद्ध ऐतिहासिक गरिमा मंडित होने पर भी सरस काव्यात्मकता से परिपूर्ण एक अपूर्व कृति है। कवि ने स्वयं इसे कथा[2]एवं संदर्भ[3] कहा हैं–

इयं नृपाणामुल्लासे ह्रासे या देशकालयोः। भैषज्यभूतसंवादिकथा युक्तोपयुज्यते।।
संक्रान्तप्राक्तनानन्तव्यवहारः सुचेतसः। कस्येदृशो न संदर्भों यदि वा हृदयंगमः।।

राजतरंगिणी में भूवैज्ञानिक युग से लेखक के युग तक के इतिहास का वर्णन है। कल्हण पारम्परिक अनुश्रुतियों के आधार पर पौराणिक शैली में जलोद्भव नामक असुर के वध और प्रजापति कश्यप द्वारा कश्मीर मंडल की स्थापना से इस इतिहास का सूत्रपात करते हैं। विक्रम पूर्व 12 वीं शताब्दी के गोनंद नामक राजा की कथा से राज चरित का क्रम आरंभ होता है। उनके इस वर्णन का आधार नीलमत पुराण है। नीलमत पुराण के अतिरिक्त कल्हण ने पूर्ववर्ती 11 ग्रंथों और पूर्व राजाओं के अभिलेख, प्रशस्ति पत्र एवं वंशावलियों के देख जाने का उल्लेख किया है।[4]

दृग्गोचरं पूर्वसूरिग्रन्था राजकथाश्रयाः। मम त्वेकादश गतां मतं नीलमुनेरपि।।
दृष्टैश्च पूर्वभूभर्तृप्रतिष्ठावस्तुशासनैः। प्रशस्तिपट्टैः शास्त्रैश्च शान्तोऽशेषभ्रमक्रमः।।

प्रथम तरंग–गोनंद प्रथम से लेकर अंध युधिष्ठिर तक 75 राजाओं का विवरण।

द्वितीय तरंग–6 राजाओं के 192 वर्षों के शासनकाल का अंकन।

तृतीय तरंग–गोनंद वंश के अंतिम राजा बालादित्य तक 10 राजाओं के 536 वर्षों के राज्यकाल का विवरण।

चतुर्थ तरंग–260 वर्षों तक राज्य करने वाले 17 नरेशों का इतिहास।

पंचम तरंग–अवंतीवर्मा के राज्यारोहण के साथ उत्पथ वंश के सूत्रपात का वर्णन तथा कल्यपालवंशज संकट वर्मा, सुगंधादेवी और शंकर वर्धन के राज्यकाल का निरूपण।

षष्ठम तरंग–10 राजाओं के 936 से 1003 ईसवी तक के समय का चित्रण।

सप्तम तरंग– 6 राजाओं के सन 1003 से 1101 ईसवीं तक के समय का चित्रण

अष्टम तरंग–सातवाहन वंश के उच्चल, भिक्षाचर और जय सिंह आदि राजाओं की जीवन गाथा तथा कृत्यों का प्रत्यक्षीकरण।

राजतरंगिणी में कवि जैसे–जैसे अपने समय के निकट आते जाते हैं, वैसे–वैसे उनकी पौराणिकता तथा कल्पनाशीलता कम होती जाती है और यथार्थ का धरातल उभरता दिखाई देता है। 812 ईसवीं के राजाओं का वर्णन बिना तिथि के किया गया है। किन्तु 813–814 ईसवी से आगे के वर्णन में तिथि क्रम का स्पष्ट उल्लेख प्राप्त होता है। अष्टम तरंग स्वयं कवि की अनुभूत एवं दृष्ट घटनाओं का प्रामाणिक एवं वस्तुनिष्ठ वर्णन है। प्रथम चार तरंगों में ऐतिहासिक तथ्य परखता की दृष्टि से कई स्थल संदिग्ध माने जा सकते हैं, किंतु अष्टम तरंग में वह अपने जैसे अपने समय के करीब आते हैं, वह एक सूक्ष्मदर्शी

इतिहासकार की भांति तथ्यों को जाँच परख कर प्रस्तुत करते हैं, साथ ही वह तथ्यों की जांच के लिए उपलब्ध सामग्री का भी उल्लेख करते हैं।

छठवें एवं अष्टम तरंगों में कल्हण देश की राजनीतिक और ऐतिहासिक परिस्थितियों पर दूरगामी प्रभाव वाले गजनी के आक्रमणों का भी उल्लेख करते हैं, तथा कश्मीर में मुस्लिम संस्कृति के प्रवेश का संकेत देते हैं। इसके अतिरिक्त राजतरंगिणी में कल्हण ने राजा हर्ष के उत्थान और मर्मातक पतन का रोमांचक इतिहास 1400 पद्य में लिखा हैं। यह पूरा अंश तत्कालीन समय का ऐतिहासिक दृष्टि से प्रामाणिक लेखा–जोखा है। वस्तुतः अष्टम तरंग कवि का स्वयं अनुभूत वर्तमान है।

डॉ रघुनाथ सिंह राजतरंगिणी ऑफ कल्हण में लिखते हैं..."कल्हण राजाश्रय प्राप्त कवि नहीं था।" अपने पिता तथा पितृत्व के समान राज्य पद, सम्मान, गौरव से विभूषित नहीं था। अपनी लेखनी की शक्ति के लिए किसी धनी मानी संरक्षक का आश्रित नहीं था। अतः उसकी लेखनी मुक्त थी। उसने जो देखा, जो सुना उसे अपनी भाषा में उपस्थित किया है। जहां प्रशंसा का प्रसंग आया वह प्रशंसा एवं निंदा का प्रसंग आने पर खुलकर निंदा की है। उसने अपने समय के राजा एवं उनके उत्तराधिकारी राजाओं के कोप की किंचित मात्र चिंता नहीं की है। इसी प्रकार जहां दोष, त्रुटि, भर्त्सना का प्रसंग आया है, वहाँ उसकी लेखनी में शिथिलता अथवा किसी प्रकार के बाहरी एवं आंतरिक प्रभाव की छाया तक नहीं मिलती। उसके अपने समय के राजाओं एवं व्यक्तियों के चरित्र चित्रण एवं मूल्यांकन ठीक उतरे हैं।[5]

यह समय कश्मीर के इतिहास में वंशानुगत संघर्षों, षड्यंत्रों, विद्रोह तथा रक्त रंजित क्रांतियों का काल था। इस समय कश्मीर का जन–जीवन तथा शासन दोनों ही अस्थिर एवं भयग्रस्त थे। इन वर्णनों में कवि की स्वयं भोगी हुई पीड़ा के दंश विद्यमान है। संभवतः इसी पीड़ा से प्रेरित होकर कल्हण ने लेखनी का शस्त्र उठाया था राजतरंगिणी की रचना उसी का प्रतिफल हैं।

राज तरंगिणी पूर्वाग्रहों से रहित निष्पक्ष एवं भयरहित कृति है कल्हण में स्वयं स्वीकार किया है कि एक सच्चे इतिहास लेखक की वाणी को न्यायाधीश के समान राग–द्वेष से मुक्त होना चाहिए तभी वह प्रशंसनीय हो सकता है।[6]

श्लाध्यः स एव गुणवान् रागद्वेषबहिष्कृता।
भूतार्थकथने यस्य स्थेयस्येव सरस्वती।।

कल्हण ने अपनी कृति में इस कसौटी का पूर्णतः पालन किया है। वह राजाओं के चारित्रिक पतन एवं कश्मीरीजनों के प्रवंचना पूर्ण जीवन का खुलकर उद्घाटन करते हैं। पारस्परिक विरोध, षड्यंत्र का वास्तविक वर्णन करते हुए भी उनकी कश्मीर के प्रति आत्मीयता अटूट है। वह कश्मीर के प्राकृतिक सौंदर्य की तुलना स्वर्ग से करते हुए कहते हैं।[7]

विद्यावेश्मानि तुङ्गानि कुंकुमं सहिमं पयः।
द्राक्षेति यत्र सामान्यमस्ति त्रिदिवदुर्लभम्।।

कल्हण ने वर्तमान समय के इतिहास लेखन हेतु निर्दिष्ट निम्नलिखित चारों चरणों का राजतरंगिणी में प्रयोग किया है–

1. साक्ष्यों का संग्रहण

2. साक्ष्यों का आलोचनात्मक मूल्यांकन

3. तथ्यों का विश्लेषण

4. इतिहास लेखन की विधियों के प्रयोग द्वारा यथार्थ इतिहास लेखन

कल्हण उपरोक्त प्रक्रिया को अपने इतिहास लेखन का आधार बनाते हैं और एक वस्तुनिष्ठ इतिहास प्रस्तुत करते हैं। वस्तुतः कल्हण का इतिहास बोध किसी महान वीर नरेश की प्रशंसा उक्तियों का आलेख भर नहीं है। वस्तुतः कल्हण उस स्थिति को समझने और उसकी व्याख्या करने की कोशिश कर रहे थे, जिसे वह स्वयं जी रहे थे। इसीलिए उनकी रचना प्रशस्तिपरक ना होकर यथार्थ बोध से युक्त है। कल्हण द्वारा किया गया स्थितियों और घटनाओं का विश्लेषण ही राजतरंगिणी को विशिष्ट बनाता है।

राजतरंगिणी मात्र इतिहास ग्रंथ नहीं है, काव्यात्मक चारुता भी उसमें सर्वत्र विद्यमान है। जिस प्रकार कल्हण उत्तम इतिहासकार उसे बताते हैं, जो राग–द्वेष से मुक्त होकर यथार्थ का वर्णन करता है, उसी प्रकार वह सुकवि के गुणों की प्रशंसा करते हुए वह कहते हैं कि वर्णनीय विषय को अमर कर देने वाले कवि, जिनका यश रूपी शरीर कभी नष्ट नहीं होता निःसंदेह वंदनीय है।[8]

वन्द्यःकोऽपि सुधास्यन्दास्कन्दी स सुकवेर्गुणः। येनायाति यशःकायः स्थैर्य स्वस्य परस्य च।।

आर.एस.पण्डित कल्हण के विषय में इसी प्रकार के विचार व्यक्त करते हुए कहते हैं–''कल्हण यह जानते थे कि सब कुछ वक्त के साथ समाप्त हो जाता है बस एक कलाकार अपनी कृति से अंकित कर इस नश्वरता का प्रतिरोध कर सकता है।''[9]

इस प्रकार कल्हण ना केवल उत्तम कवि बल्कि एक वस्तुनिष्ठ इतिहासकार के रूप में अपने यश शरीर से हमेशा अमर है, वही कल्हण की राजतरंगिणी कश्मीर के इतिहास एवं वस्तुनिष्ठ इतिहास लेखन परंपरा की आद्य कृति के रूप में सदैव स्मरणीय है।

सन्दर्भ और टिप्पणियां–

1. डॉ. रघुनाथ सिंह–राजतरंगिणी ऑफ कल्हण, भूमिका भाग, पृष्ठ–3
2. राजतरंगिणी–1/21
3. राजतरंगिणी–1/22
4. राजतरंगिणी–1/14–15
5. डॉ. रघुनाथ सिंह, राजतरंगिणी ऑफ कल्हण, सप्तम तरंग भूमिका भाग
6. राजतरंगिणी–1/7
7. राजतरंगिणी–1/42
8. राजतरंगिणी–1/3
9. R.S. Pandit, Kalhana's Rajatarangini: The Saga of the Kings of Kashmir, Sahitya Akademi,
New Delhi.